Seventeenth Loksabha

pan>

Title: Promotion of the Dard Aryans.

श्री जामयांग शेरिंग नामग्याल (लद्दाख): बहुत-बहुत धन्यवाद, सभापति महोदय ।

मैं आपके माध्यम से एक महत्वपूर्ण विषय सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं । पूरा हिमालय क्षेत्र जनजातियों का घर है । अपने देश में बहुत सारी जनजातियां रहती हैं, उनमें से एक बहुत महत्वपूर्ण जनजाति दार्द आर्या कम्यूनिटी है, जो सदियों पहले पाकिस्तान ऑक्यूपाइड कश्मीर के गिलगित से आकर पूरे लद्दाख में और कश्मीर की अलग-अलग जगहों पर बसे हुए हैं । मैं बताना चाहता हूं कि मेरी पार्लियामेंटरी कांस्टीट्वेंसी के धा-हानू, गरकोन, दारचिक, गुरकुरदो, चुलीचंद, सारत्से, सनात्से, करकित, भटगम, काकसार, चनीगुंड, द्रास सब-डिवीजन और कश्मीर के गुरैज़ और तिलैल के एरियाज में दार्द आर्यन रहते हैं, जिनकी कल्चरल इम्पोर्टेंस और अलग एथनिसिटी इस देश का एक अलंकार है । नेशनल इंट्रेस्ट को देखते हुए और नेशनल इंटिग्रेशन को देखते हुए इस बात पर तवज्जुह दिया जाए । वर्ष 1999 का कारगिल वार इसी क्षेत्र में लड़ा गया, तब भारतीय सेना के साथ इस कम्यूनिटी ने कन्धे से कन्धा मिलाकर, कदम से कदम बढ़ाकर इस देश की सीमा की सुरक्षा के लिए अपना पूरा जान-माल दांव पर लगाकर देश की सेवा की । आज यह आर्यन कम्यूनिटी पापुलेशनवाइज कम हो रही है ।

इनका कल्चर खतरे में है । यहां ऑनरेबल मिनिस्टर ऑफ कल्चर बैठे हुए हैं । मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि इनके कल्चर को आगे बढ़ाने और साथ ही साथ इनकी दार्दिक आर्यन लैंग्वेज, जिसको हिस्टोरियन कहते हैं, इस दार्दिक आर्यन लैंग्वेज के अलग-अलग प्रोग्राम्स चलाए जाएं । इसके साथ ही साथ ऑल इण्डिया रेडियो और दूरदर्शन के केन्द्र, जो लेह, कारगिल और कश्मीर में हैं, इस रेडियो स्टेशन और दूरदर्शन के माध्यम से इनकी लैंग्वेज में अलग-अलग प्रोग्राम्स चलाए जाएं, ताकि इस दार्दिक आर्य का डिस्टिंक्टिव कल्चर और आइडेंटिटी बरकरार रहे । मैं आपके माध्यम से ऑनरेबल मंत्री जी के ध्यान में यही लाना चाहता हूं । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

माननीय सभापति: श्री राजमोहन उन्नीथन जी – उपस्थित नहीं ।